ResearchPro International Multidisciplinary Journal

Vol- 2, Issue- 2, April-June 2026 ISSN (O)- 3107-9679
Email id: editor@researchprojournal.com Website- www.researchprojournal.com

स्त्री आत्मकथाओं में प्रेम–यौनिकता और सामाजिक निषेध

बालिका कांबळे

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्री कुमारस्वामी महाविद्यालय, औसा, लातूर (महाराष्ट्र)

Article Info: *(Recieved- 05/01/2026, Accept- 02/02/2026, Published- 03/04/2026)*
DOI- 10.70650/rpimj.2026v2i200006

सारांशः सामाजिक संरचना का निर्माण अनेक विषमताओं के उपरान्त हुआ है। समाज की स्थित प्राचीन काल में अत्यंत अस्थिर थी तथा समाज पूण्ररूप से विश्रृंखलित था। हमेशा नारी को केन्द्र में रखकर सामाजिक दंगे हुआ करते थे। आदिकाल में सामाजिक नियम न होने के कारण स्त्री की दशा अत्यंत दयनीय थी। स्त्री की स्थिति फुटबाल जैसी थी। स्त्री वस्तु के रूप में छीना–छपटी की शिकार थी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि मध्यकाल तक और छुटपुट वर्तमान समय में भी स्त्री युद्ध का कारण है। रामायण काल तथा महाभारत काल की संरचना ही स्त्री पर केन्द्रित है। सृष्टि की संरचना में पुरुष की अपेक्षा नारी की शारीरिक संरचना अत्यधिक भिन्न है। नारी के शारीरिक अंग आकर्षण के केन्द्र हैं। मानव हमेशा से आकर्षण वस्तु का ग्राहक रहा है।

हिन्दी साहित्य में अधिकतर साहित्यिक रचनाएँ स्त्री पर ही केन्द्रित हैं। इसका कारण यह है कि जब तक नारी की रचना सृष्टि में नहीं हुई थी तब तक पुरुष अपूर्ण था तथा संसार की गति स्त्री के बिना बाधक थी। जब से पुरुष के साथ–साथ स्त्री का प्रादुर्भाव हुआ तब से यह संसार अबाध गति के गतिमान है। समाज को पारदर्शी बनाने के लिए कुछ नियमों की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत शोधालेख आत्मकथाओं में प्रेम यौनिकता तथा सामाजिक निषेध इसी का जीवंत दस्तावेज है।

बीज शब्दः स्त्री, आत्मकथा, प्रेम, समाज, प्राचीन, संरचना, विषमता, विश्रृंखलित, केन्द्र, आदिकाल, नियम, सामाजिक, दयनीय, फुटबाल, वस्तु, इतिहास, युद्ध, संरचना, सृष्टि, पुरुष, पारदर्शी तथा प्रादुर्भाव आदि।

प्रस्तावनाः हिन्दी साहित्य की आत्मकथा विधा लोकप्रिय विधा मानी जाती है। आत्मकथा में विशेषकर स्त्री आत्मकथाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। प्रत्येक स्त्री आत्मकथा का साहित्य की दृष्टि से पृथक–पृथक अस्तित्व है। अनेक विद्वानों का कथन है कि स्त्री आत्मकथा के बीजसूत्र मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में निहित हैं। आत्मकथा का यथार्थ इतिहास की भाँति सत्य पर आधारित होता है। आत्मकथा को यदि यथार्थ का दस्तावेज कहा जाये तो इसमें किसी प्रकार की अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए।

विश्लेषणः आत्मकथा साहित्यकार के यथार्थ को व्यक्त करने का एक साहित्यिक माध्यम है। आत्मकथा के माध्यम से हम यथार्थ का शोध कर सकते हैं। आत्मकथा की स्थिति इस प्रकार की है जैसे ''प्रत्येक कला, निर्माण में से प्रति निर्माण का नाम है।''[1]

आत्मकथा मानव के मन रूपी संसार में स्थित वह स्थायी प्रज्ञा है, जो समय आने पर अपने प्रकाश (ज्ञान) द्वारा साहित्यकार की लेखनी से निकलकर पाठकों एवं समग्र समाज को आलोकित (ज्ञानवान) करती है। आत्मकथा व्यतीत जीवन, भोगे हुए क्षणों का तथा अनुभव जनित सुख–दुःखों का जीवंत दस्तावेज होती है। आत्मकथा के प्रत्येक पृष्ठ मानवीय जिजीविषा, अनुभूति, चिंतन एवं कर्तव्य के रंग से रंगा होता है। साहित्य जगत में हिन्दी आत्मकथा में विशेषकर स्त्री आत्मकथा का अपना एक पृथक विशिष्ट स्थान है। आत्मकथा का हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत कथेतर साहित्य में समावेश है। इसके अतिरिक्त कथेतर साहित्य में रेखाचित्र, संस्मरण,

जीवनी, डायरी, पत्र साहित्य, यात्रा साहित्य, रिपोर्ताज तथा निबन्ध साहित्य आदि भी सम्मिलित है।

''आत्मकथा शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। यथा– आत्म + कथा त्र आत्मकथा। इसका अर्थगत विश्लेषण इस प्रकार है। जैसे आत्म का अर्थ है अपनी, निजी, स्वकीय आदि तथा कथा का अर्थ है किस्सा, कहानी, वार्ता, चर्चा, उपन्यास, झगड़ा तथा वाद विवाद आदि।''[2]

आत्मकथा का अर्थ है– ''स्त्रीलिंग (सं.) अपने सम्बन्ध की आप (स्वयं) द्वारा कही हुई बातें या जीवन वृत्तांत, आत्मचरित्र, आपबीती, अपनी जीवनी स्वयं कही।''[3]

आत्मकथा वास्तव में किसे कहते हैं? आत्मकथा क्या है? हिन्दी साहित्य में आत्मकथा किस पायदान पर स्थित है? आत्मकथा की उत्पत्ति कहाँ से हुई? हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं से आत्मकथा का क्या सम्बन्ध है आदि प्रश्नों के उत्तर में कुछ विद्वत् जनों के विचार इस प्रकार हैं–

''आत्मकथा व्यक्ति के स्वयं भोगे जीवन का यथार्थ होता है जो स्वयं उसके द्वारा ही लिखा जाता है। आत्मकथा का मूल सिद्धान्त आत्म विश्लेषण होता है। आत्मकथा स्वयं का स्वलिखित इतिहास है। आत्मकथा स्वयं के द्वारा लिखी गयी स्वयं की कहानी है।''[4] आत्मकथा का प्रामाणिकता की संज्ञा प्रदान की गयी है यही कारण है आत्मकथा को स्वयं के अतिरिक्त अन्य कोई व्यक्ति नहीं लिख सकता है।

यदि देखा जाये तो वास्तव में मनुष्य स्वयं अपने विषय में जितना अधिक जानता है, उतना अन्य व्यक्ति नहीं। यही कारण कि व्यक्ति अपने चरित्र का जितने अच्छे ढंग से विश्लेषण कर सकता है उतना अन्य नहीं। प्रसिद्ध कलाकार स्टीफन स्विंग ने लिखा है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आत्मकथा अवश्य लिखनी चाहिए। इसका कारण यह है कि मानव का अतीत कितना ही कष्टमय रहा हो परन्तु उस पर उस काल का आवरण सदैव मोहक एवं आकर्षक ही प्रतीत होता है। व्यतीत काल की स्मृतियों को स्मरण करके व्यक्ति का मन भावुक हो उठता है। इतना ही नहीं उसे विगत जीवन की स्मृतियाँ अत्यन्त सुखद प्रतीत होती हैं। इस सन्दर्भ में देसाई रमणलाल का कथन इस प्रकार है–

''भूतकाल पर निगाह डालना वृद्धावस्था का मुख्य लक्षण है। जो व्यतीत हो गया है, उसे पुनः संग्रहीत कर देखना वृद्धावस्था की थकान को दूर करने में सहायक होता है अर्थात् आत्मकथा।''[5]

हिन्दी साहित्य में आत्मकथा के बीच हमें संस्कृत, पालि, थेरी गाथाओं तथा जैन साहित्य में प्राप्त होते हैं। चारण तथा भाटों के काल में ये अंकुर लुप्तप्राय हो गये थे क्योंकि चारण तथा भाटों का समुदाय ने इसी कार्य अर्थात् वंशावली वर्णन का कार्य अपने हाथों में ले लिया था। आत्मकथा साहित्य लेखन का प्रारम्भ भारतवर्ष में मुगलकाल संवत् 1641 से माना जाता है।

स्त्री आत्मकथा लेखन का प्रारम्भ मध्यकाल से माना गया है। स्त्री आत्मकथा लिखने की ओर क्यों अग्रसर हुई इसका इतिहास यह है कि पुरुष समाज स्त्री को सदियों से दासी तथा भोग की वस्तु मानता आया है। इतिहास साक्षी है राजाओं के विवाहों में विवाहित स्त्री के अतिरिक्त अनेक दासियों को साथ में लाने का प्रचलन था तथा राजा अनेक स्त्रियों के साथ विवाह करता था। जब रानियों की संख्या अधिक होती थी वहीं से स्त्री का जीवन कष्टमय हो जाता है इसी कष्टमय वाणी का स्वर देना आत्मकथा की श्रेणी में आता है। हिन्दी साहित्य में अनेक महिला लेखिकाओं ने आत्मकथा के माध्यम से स्त्री जीवन की सार्थकता को सिद्ध किया है।

हिन्दी साहित्य महिला आत्मकथा साहित्य जैसे 'कस्तूरी कुण्डल बसै' (मैत्रेयी पुष्पा), 'हादसे' (रमणिका गुप्ता), 'एक कहानी यह भी' (मन्नू भण्डारी), 'अन्या से अनन्या' (प्रभा खेतान), 'गुड़िया भीतर गुड़िया' (मैत्रेयी पुष्पा), 'आरोह अवरोह' (सुषभ वेदी), 'जो कहा नहीं गया' (कुसुम अंसल), 'लगता नहीं दिल मोरा' (कृष्णा अग्निहोत्री), 'पिंजरे की मैना' (चन्द्रकिरण सौनरेक्सा) आदि से भरा पड़ा हवै। इसके अतिरिक्त भी अन्य महिला साहित्यकारों ने आत्मकथाओं को लिखकर आत्मकथा की सार्थकता को सिद्ध किया है। रमणिका गुप्ता की आत्मकथा हादसे के संदर्भ में कथन है कि–

''इसे आत्मकथा न कहा जाये और न कुछ और वे आरम्भ से अंत तक इस आत्मकथा को राजनीतिक डायरी की संज्ञा प्रदान करती हैं इसमें है कि राजनीति में स्त्री की जगह क्या है और क्या हो सकती है?''6 प्रतिभा खेतान की आत्मकथा अन्या से अनन्या में सन् 1962 के भारत चीन युद्ध की कथा व्यथा के साथ राष्ट्रप्रेम एवं राजनीति के प्रतिनिष्ठा का भाव प्रदर्शित हुआ है।

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुण्डल बसे' में आन्दोलन, स्त्री दुर्दशा, पुरुष वर्ग की बर्बरता आदि का

सटीक ढंग से चित्रण हुआ है।

स्त्री आत्मकथाओं में समानता का अधिकार एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। पितृसत्तात्मक समाज व्यवस्था में स्त्री का स्थान दोयम दर्जे का है। आत्मकथा का मुख्य उद्देश्य यह है कि समाज में स्त्रियों को भी समानता का अधिकार दिलाना है। जैसे– ''वे अब तक कुशलतापूर्वक अपनी आँखों की नमी छिपाए थीं। मगर सब उमड़कर तलइयाँ भर गयीं। आवाज भी कहाँ गयी? सब समझती हूँ। गरीब किसानिन न होती तो अपनी बेटी बेचने पर मजबूर न होती।''[7]

कृष्णा अग्नि होती की आत्मकथा 'लगता नहीं दिल मेरा' में लेखिका को भोग्या बनना या सौदा करना रास नहीं आता है। लेखिका का कथन है कि मैंने दो बार शादी करके इस प्रकर के जीवन से मुक्ति पाने के लिए प्रयास किया। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पुरुष की काम लिप्सा और नारी को भोगने की इच्छा के कारण नारी समाज में सुरक्षित नहीं है। अकेली जीवन यापन करने वाली महिला का तो जीवन जीवन अत्यंत दुष्कर है उसे प्रत्येक व्यक्ति अपनी भोग्या बनाना चाहता है। यदि महिला पुरुष की कामवासना को स्वेच्छा से स्वीकार नहीं करती है तो वह उसे नाटक, प्रेम, बहकावे, धन के लोभ तथा जोर जबरदस्ती से अपने आधीन करना चाहता है। यही स्त्री आत्मकथाओं का सच है।

निष्कर्ष: समाज को निरंतरता प्रदान करने वाली शक्ति 'नारी शक्ति' है। आत्मकथा की अन्तर्यात्मा में नारी शक्ति गुप्त रूप से समाहित है। इक्कीसवीं सदी में आत्माभिव्यक्ति व्यक्त करने के लिए आत्मकथा एक हथियार के रूप में है। सदियों से नारी समाज की विडम्ब्नाओं तथा पितृसत्तात्मक प्रणाली के दंश को झेल रही है। आत्मकथा समाज के यथार्थ को प्रस्तुत करती है। आत्मकथा के माध्यम स्त्रियों में खुलकर सामाजिक व्यवस्था का विरोध करके समानता के अधिकार की मांग की है। आज हम इक्कीसवीं सदी के युग में जीवन यापनकर रहे हैं। इसलिए हिन्दी साहित्य की आत्मकथा विधा का स्थापित होना अति आवश्यक है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. मराठी से हिंदी में अनूदित दलित आत्मकथाएँ– अनु.प्रो. मुकुन्द गायकवाड़, पृ. 13, संस्करण 2022, समता प्रकाशन, कानपुर।
2. वही, पृ. 14।
3. अशोक मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश– सं. डॉ. शिवप्रसाद, भारद्वाज शास्त्री, पृ. 71, संस्करण 2014, अशोक प्रकाशन दिल्ली।
4. मराठी से हिन्दी में अनूदित दलित आत्मकथाएँ, अनु. प्रो. मुकुन्द गायकवाड़, पृ. 15–16।
5. समकालीन महिला लेखिकाओं की आत्मकथाओं में नारी विमर्श– डॉ. आंचल कुमारी, पृ. 14, संस्करण 2023, वान्या पब्लिकेशंस कानपुर।
6. वही, पृ. 65
7. हादसे, रमणिका गुप्ता, पृ. 26, संस्करण 2005, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली।

Cite this Article

"बालिका कांबळे", "स्त्री आत्मकथाओं में प्रेम–यौनिकता और सामाजिक निषेध", ResearchPro International Multidisciplinary Journal (RPIMJ), ISSN: 3107-9679 (Online), Volume:2, Issue:2, April-June 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author.